International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

"बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था"

मनोज चौधरी[1], डॉ. किरण मिश्रा[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.)
[2]विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.)

प्रस्तुत शोधपत्र में बौद्ध कालीन शिक्षा का अध्ययन किया गया है। बौद्ध शिक्षा दर्शन ने हमारे देश की शिक्षा को आकार देने में बड़ा योगदान दिया है। शिक्षा द्वारा नैतिक विकास के उद्देश्य पर बौद्ध शिक्षा ने सर्वाधिक बल दिया। इसलिये शिक्षा द्वारा नैतिक विकास की बात आज पुनः सोची जा रही है। हमारे देश में तो आज शिक्षा जगत में दो ही विचार सर्वाधिक महत्व के हैं रोजगार परक शिक्षा और नैतिक शिक्षा। विश्व में व्याप्त हिंसा, दुराचार तथा भ्रष्टाचार से निपटने हेतु बौद्ध शिक्षा के आधार पर प्रत्येक स्तर पर पाठ्यक्रम में परिवर्तन कर यदि शिक्षा प्रदान की जाये तो इन विश्व में शांति कायम कर विश्व का कल्याण किया जा सकता है।

प्रस्तावना– भारतीय दर्शनों में बौद्ध दर्शन का प्रमुख स्थान है। यह एक महत्वपूर्ण जीवन दर्शन है। गौतम बुद्ध ने तत्व मीमांसा पर अधिक जोर नहीं दिया क्योंकि उनका मानना थी कि इसमें समय लगाना व्यर्थ है क्योंकि तत्व मीमांसा जीवन की प्रगति में किसी प्रकार की सहायता नहीं करती। उन्होंने अपनी पूर्व प्रचलित सभी दार्शनिक मान्यताओं का खंडन किया, विशेष रूप से हिन्दु धर्म की प्रचलित प्रवृत्तियों के प्रति एक प्रकार का विद्रोह किया। उनका मानना थी कि जो विषय प्रत्यक्ष नहीं हैं तथा जो संदेह युक्त हैं। उनके विषय में तर्क करने का कोई लाभ नहीं है क्योंकि इससे मुक्ति प्राप्त करने के जीवन लक्ष्य तक पहुंचने में कोई मदद नहीं मिलती है।

बौद्ध दर्शन की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं –

1. वाद विवाद से ज्ञान प्राप्ति
2. निराशावाद
3. यथार्थवाद
4. प्रयोगवाद

गौतम बुद्ध ने जिन चार सत्यों की खोज की वे हैं :

1. जीवन दुखमय है
2. इन दुखों का कारण है (वह है तृष्णा)
3. दुखों से छुटकारा संभव है
4. मुक्ति का एक उत्तम मार्ग है और वह मार्ग है – निर्वाण सोपाधिशेष व निरूपाधिशेष।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

गौतम बुद्ध ने एक मध्यम मार्ग बताया जो व्यक्ति के ज्ञान–चक्षु खोलता है और उसे शांति व अन्तर्ज्ञान तथा निर्वाण की ओर ले जाता हैं। यही मध्यम प्रतिपदा का सिद्धांत हैं। इस मध्यम मार्ग को उन्होंने अष्टांग मार्ग द्वारा प्रदर्शित किया हैं। ये आठ मार्ग है –

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वाक्
4. समयक् कर्म
5. सम्यक् आजीव
6. सम्यक् प्रयास
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

गौतम बुद्ध का कहना था कि व्यक्ति का भविष्य उसके वर्तमान कर्मो पर निर्भर करता है, पर निर्वाण प्राप्त कर लेने के बाद व्यक्ति अपनी चेतना और कर्मो के बंधन से मुक्त हो जाता।

अध्ययन का महत्व – बौद्ध शिक्षा छात्रों को शिक्षित बनाने के साथ ही उनके चरित्र निर्माण पर विशेष जोर देती है। वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभावस्वरूप हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के मूलभूत आदर्शो को प्रभावित किया है, जिसके फलस्वरूप आज सब तरफ हिंसा, बेईमानी, आतंकवाद, भाषा संघर्ष, धन लोलुपता जैसे दुर्गुणों का बोलबाला है, जिसे हम बौद्ध शिक्षा के उद्देश्यों एवं पाठ्यक्रम के माध्यम से ही दूर कर सकते हैं। यही इस अध्ययन का उद्देश्य है।

अध्ययन के उद्देश्य –

(1) प्रस्तुत शोध में बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना।

(2) वर्तमान में बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था के ग्रहणीय तत्वों का अध्ययन करना।

बौद्ध दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव

बौद्ध दर्शन व शिक्षा का अर्थ

बौद्ध दर्शन के अनुसार शिक्षा वह प्रक्रिया है, जो उसे सांसारिक दुखों से मुक्ति दिलाती है और उसे निर्वाण की प्राप्ति में मदद करती है। उनका मानना है कि शिक्षा वह प्रक्रिया है जो उसे अष्टांग मार्ग की प्राप्ति में सहायता करती है।

बौद्ध दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य

बौद्ध दर्शन एक निराशावादी दर्शन है और इसके निराशावादी दृष्टिकोण के आधार पर शिक्षा के व्यावहारिक उद्देश्यों का निर्धारण करना कठिन है। फिर भी इनकी शिक्षा के उद्देश्यों में जिन उद्देश्यों को स्थान दिया गया है वे हैं – व्यक्तित्व का विकास, चरित्र का निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास, सामाजिक प्रसन्नता का विकास, संस्कृति की सुरक्षा व हस्तांतरण तथा आध्यात्मिक सुधार व भौतिक इच्छाओं से मुक्ति आदि मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त इनके अष्टांग मार्ग के आधार पर बौद्ध शिक्षा के उद्देश्यों को इस प्रकार रखा जा सकता है –

1. **छात्र को सम्यक् दृष्टि प्रदान करना :** शिक्षा का पहला उद्देश्य व्यक्ति के अज्ञान को दूर करके उसे ऐसी दृष्टि प्रदान करना है जिस से वह वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को पहचान सके।
2. **छात्र को सम्यक् संकल्प करने में सहायता करना :** शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह प्राप्त ज्ञान के अनुसार आचरण करने का संकल्प ले सके।
3. **छात्र को सम्यक् वाणी में व्यवहार करने के योग्य बनाना :** शिक्षित व्यक्ति की एक विशेषता उसकी संयमित वाणी है। अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह किसी के प्रति अप्रिय व असंयमित वाणी का प्रयोग न करे।
4. **छात्र को सम्यक् कर्म करने के योग्य बनाना :** शिक्षा का उद्देश्य है छात्र को अहिंसा, अस्तेय, इन्द्रिय संयम आदि के अनुसार आचरण करते हुए सम्यक् कर्म करने के योग्य बनाना।
5. **छात्रों को सही उपायों से अपनी आजीविका कमाने के योग्य बनाना :** व्यक्ति के जीवन की मुख्य समस्या है – आजीविका की समस्या। शिक्षा को इस समस्या के समाधान में भी सहायक होना चाहिए, लेकिन यह भी जरूरी है कि शिक्षा व्यक्ति को इस योग्य बनाये कि वह अपनी आजीविका उचित उपायों से कमाये।
6. **उसे बुराई को जीतने के लिए, निरंतर उचित प्रयास करते रहने के योग्य बनाना :** शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह अपने पुराने बुरे संस्कारों को स्वयं पर हावी न होने दे तथा इस बात के लिए निरंतर प्रयास करता रहे कि उसका मन अच्छे विचारों से युक्त रहे और बुरे विचार पूर्णतः नष्ट हो जाएं।
7. **उसे व्यक्ति स्मृति प्रदान करना :** शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को ऐसी स्मृति प्रदान करना है कि वह सदैव अच्छी बातों को याद रख सके।
8. **उसे सम्यक् समाधि के योग्य बनाना :** शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में उपर्युक्त सातों गुणों का विकास करके उसे समाधि की उस अवस्था में पहुंचाना है जिससे वह निर्वाण प्राप्ति की दिशा में बढ़ सके।

बौद्ध–दर्शन में शिक्षा के उद्देश्य व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास, सांस्कृतिक धरोहर के हस्तांतरण तथा नैतिक विकास से संबंध रखते थे। ये उद्देश्य आज के परिवेश में भी समान रूप से महत्व रखते हैं।

बौद्ध दर्शन और पाठ्यक्रम

बौद्ध दर्शन परिवर्तन में विश्वास करता है। यह आत्मा को भी स्थायी नहीं मानता है। बौद्ध दर्शन मुख्यतः दुखवाद व दुखों से मुक्ति पाने तक सीमित है। इस दृष्टि से यदि इनके पाठ्यक्रम की रचना पर विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता कि इनके अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिसमें चारों आर्य सत्यों का प्रतिपादन हो, वह व्यक्ति को सम्यक् जीविका उपार्जन के योग्य बनाये। इसके अलावा बौद्ध साहित्य तथा भगवान बुद्ध एवम् अन्य सन्तों के जीवन चरित्र के अध्ययन को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार सामान्य व्यक्ति के लिए जिन विषयों को पाठ्यक्रम में रखा गया, उनमें मुख्य हैं– पाली एवम् संस्कृत, पवित्र पुस्तकें, त्रिपिटक, तर्क शास्त्र, ज्योतिष, औषध शास्त्र आदि। जहाँ तक बौद्ध विचारों व मठों का संबंध है वहाँ 5 प्रकार की विद्याओं को पाठ्यक्रम में रखा गया था –

1. **शब्द विद्या :** इसमें व्याकरण का समावेश होता था।
2. **शिल्पासन विद्या :** इसमें विभिन्न कलाओं व उद्योगों का प्रशिक्षण सम्मिलित था।
3. **चिकित्सा विद्या :** औषध विज्ञान, शरीर विज्ञान आदि का अध्ययन इसके अंतर्गत कराया जाता था।
4. **हेतु विद्या :** इसमें तर्क शास्त्र का अध्ययन सम्मिलित था।
5. **अध्यात्म विद्या :** इसके अंतर्गत बौद्ध दर्शन व इसकी अन्य दर्शनों के साथ तुलना सम्मिलित थी।

गौतम बुद्ध विचारों की शुद्धता के लिए शारीरिक स्वास्थ्य की आवश्यकता पर बल देते थे। इसलिए उन्होंने पाठ्यक्रम में व्यायाम व खेलकूद आदि को भी स्थान दिया है।

बौद्ध दर्शन और शिक्षण विधियां

बौद्ध विचारों में शिक्षण की दो तरह की विधियों का उल्लेख मिलता है –

1. वैयक्तिक विधि
2. सामूहिक विधि।

1. **वैयक्तिक विधि :** इसमें छात्र विषय सामग्री को बार–बार दोहरा कर उसको याद करता था। स्मरण की गयी व संचित सामग्री पर मनन करता था और अंत में इसे दृढ़ता के साथ धारण करता था।

2. **सामूहिक विधि :** इसके अंतर्गत निम्न विधियां प्रयोग की जाती थी –

व्याख्यान : इसके अंतर्गत अपने विषय में पारंगत अध्यापक छात्रों को समूह में बैठा कर व्याख्यान द्वारा उन्हें ज्ञान प्रदान करता था। यह विधि अध्यापक प्रधान है।

छोटे समूह में शिक्षण : इसमें अध्यापक विद्यार्थियों के छोटे समूह को ले कर विषय सामग्री का स्वयं पाठ करता है। छात्र सुनते हैं फिर पढ़ते हैं। अध्यापक अशुद्धि संशोधन करता है। इसमें अध्यापक बीच–बीच में सूत्रों की व्याख्या भी करता है और छात्रों की शंकाओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। इस विधि में अध्यापक के साथ–साथ कुछ सीमा तक छात्र भी भाग लेते हैं।

चर्चा : यह विधि छात्र प्रधान है। इसमें छात्र गहन सिद्धांतों और अध्ययन की गयी विषय सामग्री पर परस्पर चर्चा करते हैं।

बौद्ध दर्शन में अध्यापक का स्थान

बौद्ध दर्शन में अध्यापक को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उसे अपने विषय का विशेषज्ञ होने के साथ–साथ चार आर्य सत्यों का ज्ञाता होना आवश्यक माना गया है। उसका आचरण बुद्ध द्वारा निर्दिष्ट अष्टांग मार्ग के अनुरूप होना भी नितांत आवश्यक है। इस दर्शन में दो प्रकार के अध्यापकों की कल्पना की गयी है –

1. आचार्य – जिसका कार्य छात्रों और अध्यापकों दोनों को अनुशासन में रखना है
2. उपाध्याय – इसका कार्य है अध्ययन कराना।

एक आचार्य के अधीन अनेक उपाध्याय होते थे और प्रत्येक उपाध्याय छात्रों के छोटे–छोटे समूहों को शिक्षा देने का कार्य करता था। इस प्रकार तत्कालीन शिक्षा केन्द्रों का स्वरूप आज की शिक्षा संस्थाओं जैसा ही था जिनमें एक प्रधानाचार्य के अनुशासन में अनेक अध्यापक शिक्षण का कार्य करते हैं।

बौद्ध दर्शन और छात्र : बौद्ध दर्शन में छात्र के विषय में मनोवैज्ञानिक तथ्यों का प्रतिपादन किया गया है–

1. विकास की संभावना बच्चे के अंदर छिपी है। प्रत्येक कार्य का कोई कारण अवश्य होता है अतः बच्चे को हम वह नहीं बना सकते जो बच्चे के वर्तमान अस्तित्व में विद्यमान नहीं है। अतः शिक्षा को बच्चे की अंतर्निहित योग्यताओं का विकास करना चाहिए।

2. बौद्ध दर्शन बच्चों को अनेक रूपों में समान मानते हुए भी वैयक्तिक विभिन्नता में विश्वास करता है। प्रत्येक छात्र की अध्ययन क्षमता दूसरे से भिन्न है। अतः अध्यापक को अध्यापन करते समय इस बात को ध्यान में रखना चाहिए।
3. मनोवैज्ञानिक सत्य है कि निश्चित लक्ष्य छात्र के भावी जीवन की दिशा निर्धारण करने में सहायक होता है। बौद्ध दर्शन इस में विश्वास करता है और अपेक्षा करता है कि अध्यापक बच्चे का अपने भावी लक्ष्यों को निर्धारित करने और उसकी प्राप्ति हेतु संकल्प करने में सहायता करे। पाठ्यक्रम की व्यवस्था भी इसी के अनुरूप की जानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त बौद्ध दर्शन में गुरू–शिष्य संबंध पारिवारिक परस्पर स्नेह व विश्वास पर आधारित थे।

बौद्ध शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता – बौद्ध शिक्षा आज भी उतनी ही प्रासंगिक व उपयोगी है जितनी की भगवान बुद्ध के समय में थी। वर्तमान समय में जब आतंकवाद व हिंसा सर्वत्र व्याप्त है और शांति का अभाव है तब हम इस शिक्षा व्यवस्था के आदर्शों को अपनाकर ही विश्व में शांति स्थापित कर सभी मानव एवं अन्य जीवों का कल्याण कर सकते हैं। अतः जिस तरह की शिक्षा आज हम चाहते हैं, उसके लिए बौद्ध शिक्षा के वर्तमान समय में उपयोगी तत्वों की पहचानकर, उन तत्वों को शिक्षा में स्थान देकर ही हम एक बेहतर विश्व का निर्माण कर सकते हैं एवं अपनी आने वाली पीढ़ी को एक बेहतर विरासत सौंप सकते हैं।

बौद्ध दर्शन का मूल्यांकन

यदि बौद्ध दर्शन का समग्र रूप से मूल्यांकन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि इनकी शिक्षा में एकान्तिकता के स्थान पर मध्यम मार्ग (मध्यम प्रतिपदा का सिद्धांत) का अनुसारण किया गया है। न तो यह पूर्णतः भौतिकतावादी है और न ही पूर्णतः वैराग्य का समर्थक। आज के परिवेश में इनके शिक्षा दर्शन की निम्न विशेषताएं हैं –

1. आध्यात्मिक व व्यावहारिक विषयों में समन्वय इनके शिक्षा दर्शन की पहली विशेषता है। वे एक ओर आध्यात्मिक विकास में सहायक विषयों के अध्ययन पर बल देते हैं तो दूसरी ओर आजीविका कमाने के योग्य बनाने वाले विषयों को भी उसमें सम्मिलित करते हैं।
2. बच्चों के विषय में इनकी धारणा मनोवैज्ञानिक है। वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर शिक्षा देने पर आग्रह इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है।
3. मानसिक विकास हेतु शारीरिक स्वास्थ्य व विकास पर बल दे कर ये शारीरिक मूल्यों के प्रति अपना आग्रह स्पष्ट करते हैं।
4. इनके अतिरिक्त मूल्यों में भी मध्यमा प्रतिपदा के सिद्धांत के प्रति आग्रह दिखायी देता है। यद्यपि बौद्ध दर्शन सांसारिक, भौतिक सुखों के त्याग पर बल देता है और संपत्ति रखने का निषेध करता है पर साथ ही स्पष्ट करता है कि उचित उपायों द्वारा आजीविका कमाने में कोई दोष नहीं है।
5. बौद्ध दर्शन में अध्यापक द्वारा छोटे समूहों में शिक्षण की बात भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा वाद–विवाद पर बल देना भी इसके शिक्षा दर्शन की विशेषता है।
6. बौद्ध दर्शन में सम्यक् संकल्प द्वारा नैतिक बनने का आग्रह भी इसकी विशेषता है। इनका मानना है कि मानव के विकास में नैतिक कारण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चाहे व्यक्ति गृहस्थ रहे या भिक्षु, नैतिक नियमों का पालन कर सकता है।

निष्कर्ष – इस प्रकार स्पष्ट है कि बौद्ध दर्शन एक महत्वपूर्ण शिक्षा दर्शन हमारे सामने प्रस्तुत करता है। चाहे शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण हो या पाठ्यक्रम रचना, छात्र और अध्यापक संबंध हो या शिक्षण विधियां सर्वत्र हमें मध्य मार्ग अर्थात् मध्यमा प्रतिपदा का सिद्धांत कार्य करता दिखाई देता है। यही इनके शिक्षा दर्शन की

सबसे बड़ी विशेषता है। अतः बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था के अवयवों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अपनाकर ही विश्व का कल्याण संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें –

- अग्रवाल, जे.सी. (2012) : *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,* अग्रवाल पॅब्लिकेशन्स, आगरा
- द्विवेदी, राहुल एवं सिंह, जे.डी. (2007) : *जैन एवं बौद्ध एक समग्र अध्ययन,* यूथ कम्पटीशन टाइम्स, इलाहाबाद
- फाड़िया, बी.एल. (2009) : *अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध,* साहित्य प्रकाशन, आगरा
- लाल, रमन बिहारी (2006) : *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत,* रस्तोगी पब्लिकेशन शिवाजी रोड़, मेरठ, संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 142
- पचौरी, डॉ. गिरीश (2007) : *शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास,* इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, कॉलेज रोड़, मेरठ, नवीन संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 155
- पाण्डेय, वी.के. (2009) : *प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- शर्मा, बी.एल. एवं माहेश्वरी, बी.के. (नवीनतम संस्करण) : *पर्यावरण एवं मानव मूल्यों के लिये शिक्षा,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, नवीन संस्करण

शोध पत्र –

- ❖ **गौतम, मुकेश कुमार (2018)** ''विश्वशांति एवं सद्भाव हेतु शिक्षा'', *इनोवेशन द रिसर्च कान्सेप्ट,* संस्करण (3), अंक (2), फरवरी 2018, पृष्ठ 148–152
- ❖ **यादव, अजीत कुमार (2018)** ''बौद्ध कालीन शिक्षा : शांति शिक्षा को व्यापक आधार प्रदानकर्ता के रूप में'', IJSRST, VOL. 4, ISSUE 2, Page No. 1748-1754